पंत की काव्यगत विशेषता (बी.ए. प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष)

डॉ. बिभा कुमारी

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।

निकलकर नयनों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।।

इन पंक्तियों के रचयिता कवि सुमित्रानंदन पंत कोमल भाव के कवि हैं एक ओर उनकी रचनाओं में मानव मन के सूक्ष्म कोमल भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति है तो दूसरी ओर प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण हुआ है। कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म अल्मोड़ा में हुआ। बहुत बचपन से ही इन्होंने कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। मात्र सात वर्ष की उम्र में ही छंदों की रचना करने लगे थे। सन 1916 में इनकी पहली कविता 'गिरजे का घंटा' प्रकाशित हुई। 1918 ईसवी से पूर्ण सक्रिय रूप में इन्होंने अपनी वास्तविक काव्य-यात्रा शुरू कर दी। असहयोग आंदोलन के कारण महाविद्यालय की शिक्षा में बाधा उपस्थित हुई, ऐसे में आगे की पढ़ाई इन्होंने घर पर पूरी की। अंग्रेज़ी और बंगला साहित्य का इन्होंने विशद अध्ययन किया। इस अध्ययन का प्रभाव इनके व्यक्तित्व और साहित्य पर पड़ा। इनकी कविताएँ सरस्वती में प्रकाशित हुईं। ये प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन्होंने कविता के अतिरिक्त नाटक, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में भी लेखन किया तथा आत्मकथा भी लिखी। उमर खैय्याम की रूबाइयों का 'मधुज्वाल' के नाम से हिंदी में अनुवाद भी किया। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-

'उच्छ्वास', 'ग्रंथि', 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णकिरण', 'स्वर्णधूलि', 'उत्तरा', 'रजतशिखर', 'वाणी', 'पतझड़', 'लोकायतन', 'चिदम्बरा' आदि।

प्रकृति से पंत का अगाध प्रेम है। उनके काव्य में भावपक्ष पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनकी कविताओं का मुख्य विषय प्रकृति है। यद्यपि छायावाद के सभी कवियों ने प्रकृति के प्रति लगाव रखा, उसका विविध चित्रण अपने काव्य में किया, परंतु पंत प्रकृति-प्रेम और प्रकृति- चित्रण में सबसे आगे दिखाई देते हैं। बचपन से प्रकृति के सान्निध्य में ही बड़े हुए और प्रकृति से उनका प्रेम बढ़ता ही चला गया। उनकी काव्य चेतना की प्रमुख प्रेरणा प्रकृति ही रही है। इस संबंध में उन्होंने स्वयं कहा है-

"कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है। जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घण्टों एकांत में बैठा प्रकृति के दृश्यों को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अव्यक्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था, मैं जब कभी आँखें मूँदकर लेटता था, तो दृश्यपट चुपचाप मेरी आँखों के सामने घूमा करता था। अब मैं सोचता हूँ कि क्षितिज में सुदूर तक फैली, एक के ऊपर एक उठी ये हरित नील धूमिल कूर्मांचल की छायांकित पर्वत-श्रेणियाँ, जो अपने शिखरों पर रजतमुकुट हिमालय को धारण किए हुए हैं और अपनी ऊँचाई से आकाश की अवाक नीलिमा को और भी ऊपर उठाए हुए है। किसी भी मनुष्य को अपने महान नीरव सम्मोहन के आश्चर्य में डुबोकर कुछ काल के

लिए भुला सकती है और यह शायद पर्वत प्रान्त के वातावरण का ही प्रभाव है कि मेरे भीतर विश्व और जीवन के प्रत्येक गंभीर आश्चर्य की भावना पर्वत ही की तरह निश्चित रूप से अवस्थित है।"

पंत प्रकृति के कोमल सुकुमार कवि हैं। उन्होंने प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन दोनों ही रूपों में चित्रण किया है। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण काव्ययात्रा में एक ऐसे कवि के रूप में स्वयं को स्थापित किया है जो अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही धरातल पर पाठकों के मन-प्राण को अपने वश में कर लेता है।

अपनी काव्ययात्रा के आरंभिक दौर में पंत सौंदर्य से प्रभावित व आकर्षित होकर कविता करते हैं। इस युग की इनकी कृतियां हैं- 'वीणा' और 'ग्रंथि'। ग्रंथि में सौंदर्य और श्रृंगार की सुंदर-सुकोमल अभिव्यक्ति हुई है। 'पल्लव' इस दौर की उनकी सबसे अधिक प्रौढ़ कृति मानी गई है। 'गुंजन' इस दौर की अंतिम कृति है। ये कृतियां छायावाद युग के दौरान की हैं, इनमें छायावादी काव्य की समस्त विशेषताएँ हैं। पंत की काव्ययात्रा के इस आरंभिक दौर को विद्वानों ने सौंदर्य-युग नाम दिया है।

इनकी काव्ययात्रा के दूसरे दौर तक प्रगतिशील साहित्य लेखन आरम्भ हो गया था। पंत जी भी प्रगतिवादी भावबोध के अनुकूल काव्यरचना करने लगे। विद्वानों ने उनकी काव्ययात्रा के इस दौर को प्रगति-युग कहा। इस युग की कृतियों में 'युगांत', 'युगवाणी', और 'ग्राम्या' प्रमुख हैं। इस युग में आकर पंत छायावाद की वायवीय दुनिया से जन-जीवन की ओर अपनी दृष्टि डालते हैं। कल्पना की सुंदर गलियों से निकलकर यथार्थ की कंकरीली, कांटों भरी गली में प्रवेश करते हैं। यथार्थ के क्रूर स्वरूप को पहचानकर अपने काव्य में उसकी अभिव्यक्ति करने लगते हैं। इनकी प्रगतिवादी युग की रचनाओं में साम्यवादी विचारधारा और मानवतावादी दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट रूप में प्रकट हुए हैं। 'युगांत' संग्रह की 'मनुष्य' कविता में मानवतावादी स्वर की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है।

-"मानव का मानव पर प्रत्यय; परिचय, मानवता का विकास

विज्ञान-ज्ञान का अन्वेषण; सब एक, एक सब में प्रकाश!

प्रभु का अनंत वरदान तुम्हें; उपभोग करो प्रतिक्षण नव- नव

क्या कमी तुम्हें है त्रिभुवन में; यदि बने रह सको तुम मानव!"

'युगवाणी' में प्रगतिवादी कविताओं के साथ-साथ प्रकृति प्रेम की कविताएँ भी हैं।

पंत की काव्ययात्रा का तीसरा दौर चिंतन-प्रधान कविताओं का दौर है। विद्वानों ने इसे पंत की काव्ययात्रा का आध्यात्मिक युग कहा है। इस युग की रचनाएँ चिन्तनवादी हैं। आध्यात्मिक युग की प्रमुख कृतियां हैं –

'स्वर्ण किरण', 'स्वर्ण धूलि', और 'उत्तरा'। इन कृतियों में कवि पंत व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। यहाँ वे वैश्वीकृत मानवतावाद की बात करते हैं। सौंदर्य-युग की उनकी कविताएँ छायावादी प्रभाव के कारण अपने स्वरूप में अंतर्मुखी हैं। प्रगति-युग की कविताएँ प्रगतिवाद के प्रभाव के कारण अपने स्वरूप में बहिर्मुखी हो गई हैं। आध्यात्मिक युग तक आकर कवि पंत का काव्य भविष्य को लेकर चिंतित है। अपनी सम्पूर्ण काव्ययात्रा में कवि पंत जीवन को अत्यंत निकटता से अनुभूत करते रहे और यही कारण है कि उनके तीनों युगों की कविता मानव जीवन के विविध पक्षों, अनुभवों और अनुभूतियों को पूर्ण जीवंतता और सूक्ष्मता से अभिव्यक्ति देती है।

पंत प्रकृति-प्रेम और मानव जीवन के विविध प्रसंगों, अनुभूतियों को अपनी सशक्त भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। प्रकृति एवं जीवन के सजीव चित्र उपस्थित करने वाले ऐसे कुशल कवि अत्यंत भावोनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा के माध्यम से बिल्कुल सजीव दृश्य उपस्थित कर देने में कवि पंत सिद्धहस्त हैं। भाषा के माध्यम से काव्य में जीवन उपस्थित कर देने की यह क्षमता मात्र उन्हीं में है, वे कुशल भाषा-शिल्पी हैं, सौंदर्य, यथार्थ व विचार इत्यादि का चित्रण करने में उनकी लेखनी अद्‌वितीय है। शब्द-चयन में उनका कोई जबाव नहीं है। उनकी काव्यकला वर्ण्य-विषय के बाह्य सौंदर्य को जिस सजीवता से चित्रित करती है उतनी ही गहराई से शब्दों की आत्मा की अथाह गहराई में प्रविष्ट कर उसे जीवन प्रदान करती है। वे एक-एक शब्द को उसकी संपूर्णता के साथ अपने काव्य में उतारते हैं। 'पल्लव' की भूमिका में उन्होंने स्वयं ही सूक्ष्म शब्द-विश्लेषण करते हुए कहा है –

"भिन्न-भिन्न पर्यायवाची शब्द प्रायः संगीत के कारण, एक ही पदार्थ के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को प्रकट करते हैं। जैसे –'भ्रू' से क्रोध की वक्रता, 'भृकुटि' से कटाक्ष की चंचलता, 'भौहों' से स्वाभाविक प्रसन्नता, ऋजुता का हृदय में अनुभव होता है। ऐसे ही 'हिलोर' में उठान, 'लहर' में सरिता के वक्षस्थल की कोमल कंपन, 'तरंग' में लहरों के समूह का एक-दूसरे को धकेलना, उठकर गिर पड़ना, बढ़ो-बढ़ो कहने का शब्द मिलता है, 'वीचि' से जैसे किरणों में चमकती, हवा के पलने में हौले-हौले झूलती हुई हँसमुख लहरियों का, 'उर्मि' से मधुर मुखरित हिलोरों का, 'हिल्लोल-किल्लोल' से ऊँची-ऊँची बाँहें उठती हुई उत्पातपूर्ण तरंगों का आभास मिलता है।"

पंत की भाषा सदैव सशक्त बनकर उभरी है।